सभ ते वडा

सतिगुर नानक

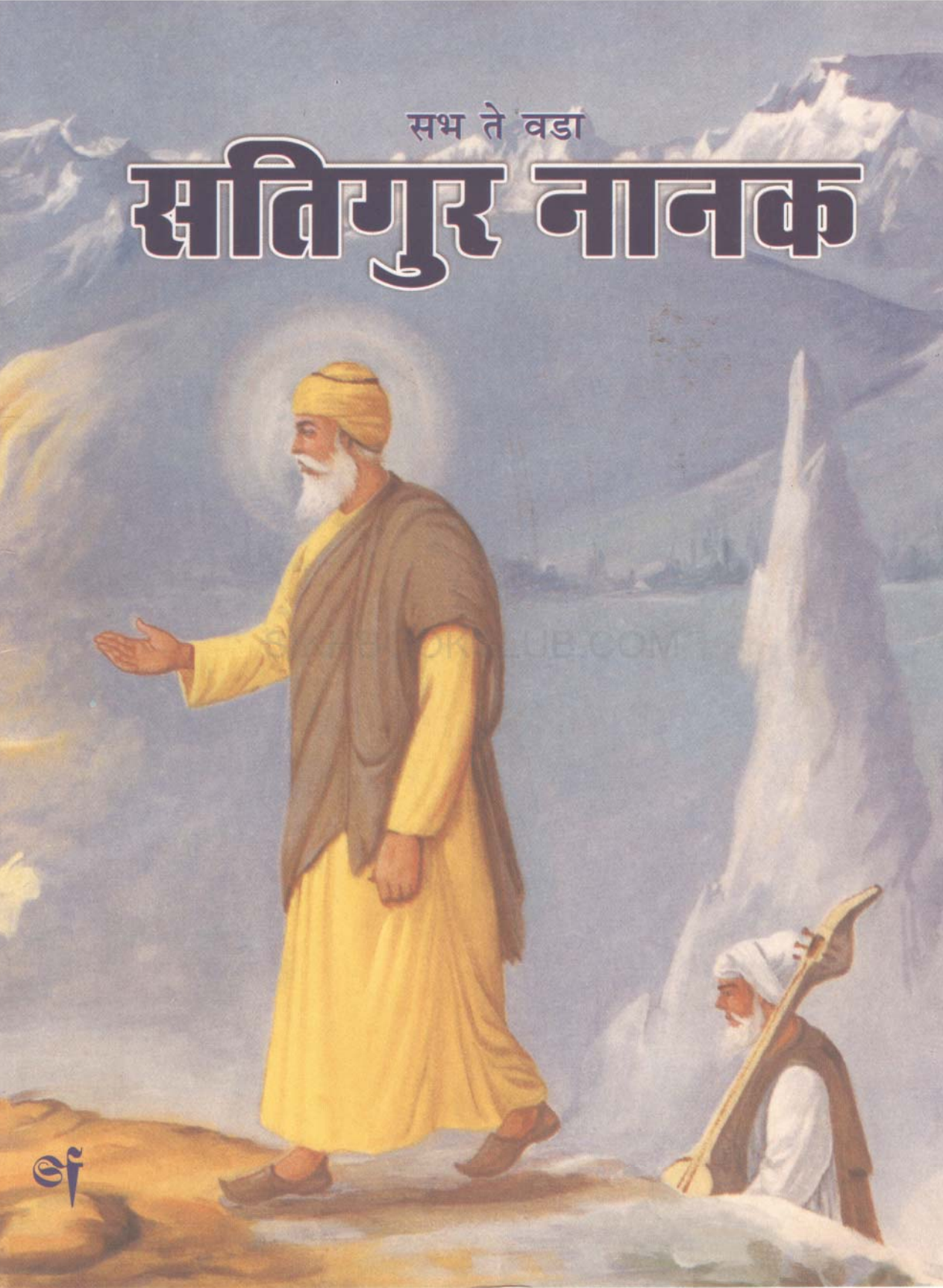

गुरू नानक देव जी

प्रकाश	:	1469 ई. में राए भोए की तलवंडी में (अब ननकाणा साहिब, पाकिस्तान)
माता पिता	:	माता त्रिपता व महता कल्याण दास जी
बहन	:	बेबे नानकी जी
गुरू के महल	:	माता सुलक्खणी जी
साहिबज़ादे	:	बाबा सिरी चंद व बाबा लख्मी दास जी
प्रथम संदेश	:	1499 ई. में सुल्तानपुर लोधी के स्थान पर रहते हुए, एक दिन सुबह गुरू साहिब वेईं नदी में स्नान करने गए जहां वह नाम सिमरन में लीन हो गए और वहां उन्हें ईश्वरीय इल्हाम हुआ। वहां से बाहर आ कर उन्होंने लोकमत को अपना प्रथम संदेश दिया - "न को हिन्दू न मुसलमान", भाव सभी एक ही पिता की संतान हैं, कोई हिन्दू या मुस्लमान नहीं है।
यात्राएं	:	गुरू नानक साहिब ने समूह मनुष्यता के कल्याण हित चार उदासियां (यात्राएं) भिन्न-भिन्न दिशाओं में की। आप जी ने पूरे भारत के इलावा श्री लंका, मक्का (साऊदी अरब), ईराक, ईरान व अफगानिस्तान की भी यात्रा की। आप जी ने 20 वर्ष यात्राओं में लगाए। आप जी की यात्राओं का उद्देश्य मनुष्यता की भलाई व दूसरी धार्मिक रिवायतों के साथ संवाद करके सत्य के मार्ग को प्रक्ट करना था।
साथी	:	इन यात्राओं के दौरान आप जी के साथी भाई मरदाना जी थे। भाई मरदाना जी के शीर्षक के अधीन 3 शब्द गुरू ग्रंथ साहिब में भी अंकित हैं।
बाणी	:	कुल शब्द 974 जो कि 19 रागों में उच्चारण हुए हैं
प्रमुख बाणियां	:	जपु, आसा की वार, पहरे, अलाहणीआं, कुचजी, पटी, सुचजी, थिती, आरती, (दखणी) ओंकार, बारह माहा, सिध गोसटि
वारें	:	3 - माझ, आसा व मलार राग में
शिक्षा	:	नाम जपो, किरत करो व वंड छको
मुख्य कार्य	:	* संगत व लंगर की स्थापना * संगत में गुणों के आधार पर मुखिया का चुनाव * बाणी एकत्रित करके पोथी रूप देना
शहर बसाना	:	गुरू नानक साहिब ने 1524 ई. में रावी नदी के तट पर करतारपुर शहर बसाया
समकालीन शासक	:	बहिलोल लोधी (रा. 1451-89 ई.), सिकंदर लोधी (रा. 1489-1517 ई.), इब्राहिम लोधी (रा. 1517-30 ई.), बाबर (रा. 1526-30 ई.), हुमायुं (रा. 1530-40 ई.)
गुरूगद्दी सौंपना	:	भाई लहणा जी को 'अंगद' नाम देकर सिक्खों का दूसरा गुरू स्थापित किया
ज्योति-जोति	:	1539 ई. में करतार पुर, रावी नदी के तट पर (अब पाकिस्तान में)

कलिजुग बाबे तारिआ सति नामु पढ़ि मंत्र सुणाइआ।।
कलि तारण गुरू नानक आइआ।।
(भाई गुरदास जी, वार 1, पउड़ी 23)

गुरू नानक देव जी

सिक्ख धर्म के संस्थापक व दस गुरू साहिबान में प्रथम, गुरू नानक देव जी का प्रकाश सन् 1469 ई. में राए भोए की तलवंडी, पाक्स्तिान में हुआ, जिसे अब ननकाणा साहिब कहा जाता है। आप जी के पिता, कलयाण दास जी, जिन्हें महता कालू कह कर याद किया जाता है, गांव के जागीरदार राए बुलार के पटवारी थे। महता कालू जी की अपनी कुछ भूमि भी थी जहां पर वह खेतीबाड़ी करते और गायें-भैंसे रखते थे। गुरू साहिब की माता जी का नाम माता त्रिपता तथा एक बड़ी बहन बेबे नानकी थीं जो कि अपने छोटे भाई से बहुत दुलार करती थी।

सच्ची विद्या

गुरू नानक एक सुलझे हुए बालक थे जो कि पांच वर्ष की अल्प आयु में ही जीवन के महत्व आदि के बारे में प्रश्न करने लग पड़े। जब आप जी को अक्षरों का ज्ञान लेने के लिए पंडित के पास पढ़ने भेजा गया तो आप ने अक्षरों पर आधारित गहरे रहस्य व फलसफे वाली बाणी की रचना करके पंडित जी को हैरान कर दिया। अध्यापक बाल गुरू के दीर्घ ज्ञान से बहुत प्रभावित हुए और उन्होंने कहा, "नानक प्रभु का कोई दूत है, संत है, जो कि मानवता को सत्य का रास्ता दिखाने के लिए आया है।"

सर्प छाया

SIKHBOOKCLUB.COM

गुरू साहिब की सूझ-बूझ व समझ के बारे में जान कर आप जी के माता-पिता व बहन बहुत प्रसन्न हुए पर वे रोज़ाना जीवन के कार्यों में आप जी द्वारा दर्शायी जा रही निराशता से चिंतित थे। एक बार आप जी को गाय-भैसों व अन्य जानवरों से खेतों की देखभाल करने के लिए भेजा गया। खेतों का चक्कर लगाने के पश्चात् आप जी एक वृक्ष की छाया में बैठ गए और वहीं परमात्मा के नाम में लीन हो गए। दोपहर में छाया दूसरी ओर हो गई। उसी समय वहां से गांव का मुखिया, राए बुलार निकल रहा था और उसने थोड़ी दूर से गुरू नानक को वृक्ष के नीचे लेटे देखा। यद्यपि सूर्य सीधा गुरू साहिब के मुख के ऊपर था पर फिर भी गुरू साहिब के चेहरे के ऊपर छाया थी।

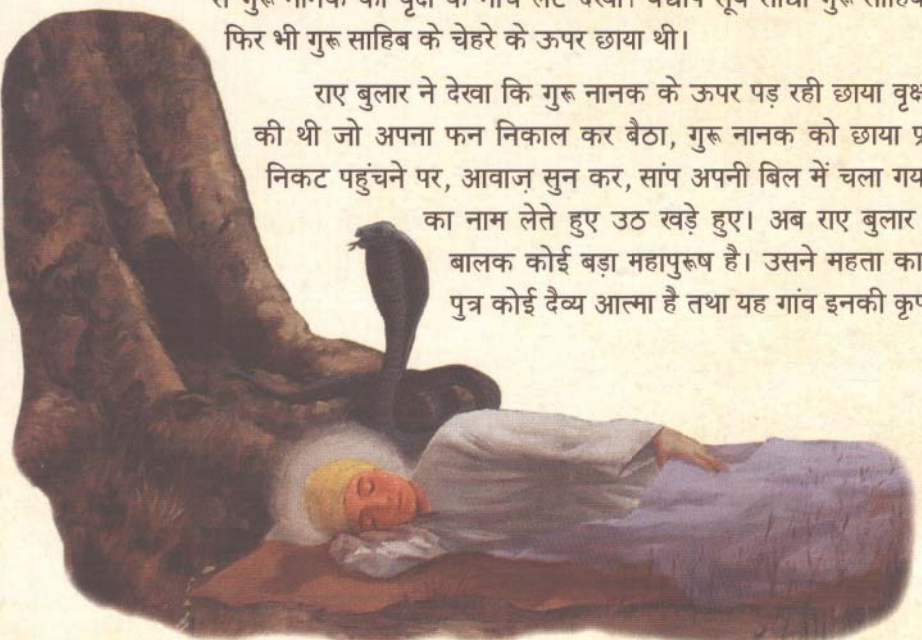

राए बुलार ने देखा कि गुरू नानक के ऊपर पड़ रही छाया वृक्ष की नहीं बल्कि एक सर्प की थी जो अपना फन निकाल कर बैठा, गुरू नानक को छाया प्रदान कर रहा था। उनके निकट पहुंचने पर, आवाज़ सुन कर, सांप अपनी बिल में चला गया और गुरू साहिब भी प्रभु का नाम लेते हुए उठ खड़े हुए। अब राए बुलार को दृढ़ हो गया कि यह बालक कोई बड़ा महापुरूष है। उसने महता कालू जी से कहा, "आपका पुत्र कोई दैव्य आत्मा है तथा यह गांव इनकी कृपा से ही बस रहा है।

जनेऊ की रस्म

नौ वर्ष की आयु में परिवार की ओर से जनेऊ धारण करने की रस्म का आयोजन किया गया। पंडित जी को धर्म की रक्षा करने वाले कथित जनेऊ को तैयार करते देख, गुरू साहिब ने कहा, 'पंडित जी ! अगर आपके पास कोई ऐसा न टूटने वाला धागा है जो मनुष्य को दयालु, संतोषी व संयमी बनाता हो तो मैं अवश्य पहनूंगा। नहीं तो मैं कोई अन्य धागा धारण करने को तैयार नहीं। वहां मोजूद लोगों ने ऐसे सूझ भरे बोल पहले कभी नहीं सुने थे। गुरू नानक साहिब शुरू से ही व्यर्थ कर्म-कांडों की अपेक्षा प्रभु की प्रेमा-भक्ति पर जोर देते थे।

वैद्य के साथ

छोटी आयु से ही गुरू नानक साहिब उस समय की धार्मिक परम्पराओं व मुखियों से लगातार मेल-मिलाप व संवाद करते रहते थे। आप जी मानवता से रिक्त रीति-रिवाज़ों व कर्म-कांडों को नहीं मानते थे। यह सब देख कर परिवार जनों को लगा कि गुरू साहिब को कोई शरीरिक या मानसिक रोग है। आप जी के पिता, महता कालू जी ने वैद्य हरदास जी को बुला भेजा जिन्होंने गुरू साहिब की जांच की। गुरू साहिब आराम कर रहे थे जब वैद्य जी ने उनकी बाजू पकड़ कर नब्ज़ देखनी चाही, गुरू साहिब ने वैद्य जी के हाथ से बाजू छुड़ाते हुए कहा, "वैद्य जी ! मुझे कोई शारीरिक रोग नहीं, मुझे ऐसा रोग है जो आपकी समझ से बाहर है। अच्छा वैद्य वही होता है जो पहले रोग की पहचान करे और फिर उससे निजात पाने की दवा दे। आप असली वैद्य नही हैं क्योंकि आप अभी अपनी बीमारी का ईलाज ही नहीं कर सके।" यह सुनते ही वैद्य जी ने जांच करना बंद कर दिया और बोले, "मैं तो बिल्कुल स्वस्थ हूं, मुझे कौन सा रोग है जिस बारे में आप बात कर रहे हो?" गुरू साहिब ने जवाब दिया, "आपको जन्म व मृत्यु का गंभीर रोग लगा हुआ है, आपकी दी हुई दवाओं से यह जीवन-मृत्यु का जाल खत्म नहीं होगा। अकाल पुरख ही असल वैद्य है जो कि जीवन-मृत्यु के जाल में नहीं आते।" यह सुन कर वैद्य जी ने यह निष्कर्ष निकाला कि गुरू नानक को किसी ईलाज की आवश्यकता नहीं बल्कि यह तो स्वयं कइयों को रोग-मुक्त करने के योग्य हैं।

SIKHBOOKCLUB.COM

सच्चा सौदा

गुरू नानक साहिब अक्सर गहरी विचारों व सिमरन में लीन रहते। आप जी दुनियादारी के कार्यों की ओर ज़्यादा ध्यान न देते जबकि आप के माता-पिता चाहते थे कि उनका पुत्र भी औरों के समान आम दुनियावी जीवन व्यतीत करे। इसीलिए उन्होंने आप जी का विवाह बीबी सुलखणी जी के साथ कर दिया।

आप जी के पिता, महता कालू जी ने सोचा कि आप को दुकान के लिए कुछ वस्तुएं खरीदने के लिए

पास के शहर में भेजा जाए ताकि आप का ध्यान कारोबार में लगे। उन्होंने आप जी को बीस रूपए की रकम दी और कहा, ''एक साथी को लेकर चूहड़खाने जाओ और वहां से कुछ वस्तुएं ख़रीद कर लाओ ताकि कुछ लाभ हो।'' रास्ते में घने जंगलों में से निकलते हुए आप जी को कुछ साधू मिले जो कि कई दिनों से भूखे थे। आप जी ने सोचा, ''मुझे कोई लाभदायक सौदा करने के लिए कहा गया है। यह साधू इतने दिनों से भूखे हैं, क्या इन्हें भोजन छकाने से अच्छा और कोई बढ़िया कार्य हो सकता है। आप जी ने दी हुई रकम में से साधुओं के लिए ज़रूरी वस्तुएं ली और वापिस वहीं पर आ गए। आप जी ने साधुओ को भोजन छकाया तथा पहनने को कपड़े दिए, जिसके लिए साधुओ ने गुरू साहिब का धन्यवाद किया। साथ ही गुरू साहिब ने साधुओ को यह उपदेश दिया कि वे जंगलों में रहना त्याग दें और वापिस अपने घरों में चले जाएं, जिसके लिए साधू राज़ी हो गए। यह बात विचार करने वाली है कि उस समय के बीस रूपए आजकल के हज़ारों (लाखों) रूपए के समान थे। गुरू साहिब ने साधुओ के न केवल खाना व कपड़ा दिया बल्कि माली सहायता भी की जिससे वे अपना नया जीवन आरंभ कर सकें।

मोदी खाने में

गुरू साहिब की बहन बीबी नानकी व उनके पति जय राम जी ने गुरू साहिब को अपने पास सुलतानपुर आ कर रहने का निमंत्रण भेजा। पुत्र के जाने पर यद्यपि माता त्रिपता जी दुखी थे पर उन्हें यह आशा थी कि शायद नये स्थान पर गुरू साहिब की रूचि दुनियावी जीवन की ओर हो जाए।

सुलतानपुर में नवाब दौलत खान लोधी के मोदीखाने में आप जी को रोज़गार मिल गया। आप जी अपने काम को बाखूबी निभाते तथा जो भी आप से सामान लेने आता, आप जी के काम को देख कर प्रसन्न होता। अपनी आवश्यकता अनुसार ज़रूरी वस्तुएं रख कर बाकी बचा अपना राशन भी आप ज़रूरतमंदों में बांट देते।

एक बार जब गुरू साहिब तोल रहे थे तो आप 13 (तेरह) की संख्या पर ही ठहर गए। क्योंकि उच्चारण में 'तेरह' से लगता है 'तेरा'। आप जी ने दुहराना शुरू कर दिया, 'तेरा, तेरा, तेरा .... - सामान लेने आए लोगों ने समझा कि यह उनके लिए कहा जा रहा है। गुरू साहिब को ''तेरा, तेरा....'' बोलते तथा बिना जांच के वज़न किये सामान बांटते देख, किसी ने अधिकारियों से शिकायत कर दी कि मोदीखाने में भारी नुकसान हो रहा है। गुरू साहिब को दरबार में बुला कर इसका जवाब मांगा गया।

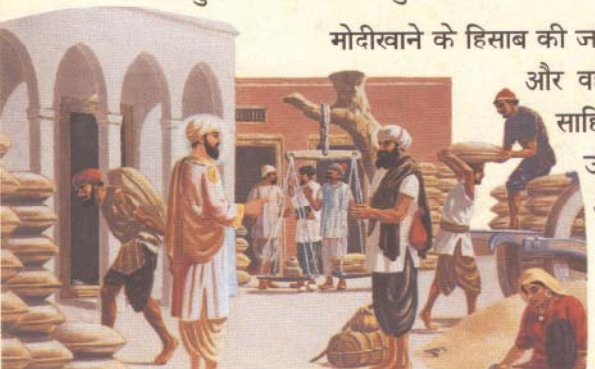

मोदीखाने के हिसाब की जांच-पड़ताल की गई लेकिन उसमें कोई गलती नहीं पाई गई और वहा पड़ी राशन सामग्री भी पूरी निकली। यह देख कर गुरू साहिब ने कहा, ''यह सब कुछ अकाल पुरख के हुक्म में है। यह उसने आप ही किया है। वह ही सभी को सब कुछ देने वाला है और वह ही सब की संभाल करता है।''

साहिब ने जवाब दिया, ''नमाज़ पढ़ते समय पूरा समय आपका ध्यान आपने घर के आंगन में नवजात बछड़े की तरफ था कि कहीं वह कुएं में न गिर जाए, तो फिर मैं किस के साथ नमाज़ पढ़ता।'' यह सुन कर काज़ी शर्मिंदा हुआ व कहने लगा, 'पर फिर आप नवाब साहिब के साथ नमाज़ अदा कर लेते?' गुरू साहिब ने जवाब दिया, ''नवाब साहिब तो काबुल में घोड़े खरीदने में व्यस्त थे।'' नवाब ने भी माना कि नमाज़ अदा करते समय उनका मन काबुल के घोड़ा-बाज़ार में घूम रहा था। यह सुन कर वहां मौजूद लोग हैरान हैरान हो गए और कहने लगे, ''यह तो कोई रूहानी जीव है जो लोगों के दिलों की बातें जानता है।

गुरू नानक साहिब की उदासियां

गुरू साहिब अब 'शब्द' के इलहाम को जगत में बांटने के लिए तैयार थे। आप जी को सच्चा संदेश प्रक्ट हो चुका था। इस समय गुरू साहिब की आयु तीस वर्ष की थी। अपने परिवार को पीछे छोड़ कर व केवल भाई मरदाना जी को अपने साथी के रूप में साथ लेकर आप ने सुलतानपुर छोड़ दिया, और लगभग बीस साल प्रचारक दौरे किए। आप जी की यात्राओं को चार लम्बी उदासियों के रूप में गिना जाता है जो कि आप ने पूरब, दक्षिण, उत्तर व पश्चिम दिशाओं की ओर की और प्रत्येक यात्रा के पश्चात् आप वापिस पंजाब आए। गुरू साहिब अपनी यात्राओं के दौरान कई देशों व भिन्न-भिन्न धार्मिक रिवायतों के केन्द्रों पर गए। आप जी के पंडितों, साधुओं, योगियो के फिरकों व साथ ही मौलानों, पीरों व काज़ियों के साथ संवाद कोई गैर-संजीदा खोजी वाले नहीं बल्कि एक गुरू की तरह थे।

SIKHBOOKCLUB.COM

मलक भागो का ब्रहम भोज

अपनी यात्राओं के दौरान गुरू नानक साहिब सैदपुर (अब पाकिस्तान में गुजरांवाला क्षेत्र का ऐमनाबाद) पहुंचे। यहां गुरू साहिब ने एक बढ़ई, भाई लालो के घर तीन दिनों तक निवास किया। भाई लालो ने गुरू साहिब की बहुत प्रेम से सेवा की। उस समय यहां के एक हिन्दू जागीरदार मलक भागो ने अपने घर पर एक ब्रहम भोज का प्रबंध किया हुआ था जिसमें आस-पास के ब्राहमणों, साधुओं व संतों को निमंत्रण दिया गया था। ब्रहम भोज के दौरान मलक भागो के पास खबर पहुंची कि एक महापुरूष गुरू नानक ने उनके निमंत्रण को स्वीकार नहीं किया तथा उसके बजाए वह एक नीची जाति के बढ़ई के घर भोजन ग्रहण कर रहे हैं। उसने फौरन ही गुरू साहिब को बुला भेजा। गुरू साहिब के पहुंचने पर मलक भागो ने नाराज़गी भरे अंदाज़ में कहा, ''यह क्या कि आप ने ब्रहम भोज के निमंत्रण को मना कर दिया, क्या इस नीचि जाति के व्यक्ति के घर का भोजन मेरे भोजन से अधिक स्वादिष्ट है?''

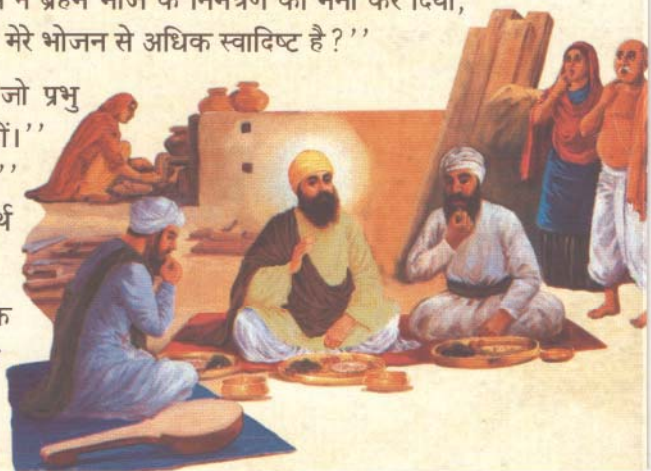

गुरू साहिब ने कहा, ''मैं वही खाता हूं जो प्रभु भेजता है, उसकी नज़र में कोई जाति है ही नहीं।'' ''फिर आप वह खाओ जो इस घर में बन रहा है।'' साथ ही मलक भागो की रसोई में से बढ़िया पदार्थ गुरू साहिब के समक्ष प्रस्तुत किये गये।

भाई लालो भी गुरू साहिब के पीछे मलक भागो के घर आ गया। गुरू साहिब ने उससे कहा

न को हिन्दू न मुस्लमान

गुरू नानक साहिब सुलतानपुर में एक अकाल पुरख की अराधना व नाम-सिमरन में लीन रहते और वहां आप जी के आस-पास श्रद्धालु एकत्र हो गये। एक मुसलमान मरासी, भाई मरदाना (1459-1534 ई.) आप जी को यहां पर मिले। गुरू साहिब बाणी का गायन करते, सभी के साथ मिल कर भोजन करते तथा लोगों को सादा व नेक जीवन निर्वाह करने के लिए प्रेरित करते। जब गुरू साहिब कीर्तन के रूप में अकाल पुरख का गुण-गायन करते तो भाई मरदाना जी रबाब बजा कर गुरू साहिब का साथ देते। गुरू साहिब का परिवार - गुरू के महल व दो साहिबज़ादे (बाबा सिरी चंद व लखमी दास जी) भी गुरू साहिब के पास सुलतानपुर आ गए।

एक सुबह जब गुरू साहिब सुलतानपुर से साथ बहती वेईं नदी में स्नान करने गए तो तीन दिनों तक वापिस ही नहीं आए और कइयों को भ्रम हुआ कि आप शायद उसमें डूब गए हैं। गुरू साहिब निरंतर साधना में लीन रहते हुए अकाल पुरख के साथ एक रूप हो गए थे। वहां आप जी को यह अहसास हुआ कि आप जी को दुनिया की लोकाई को पार लगाने के लिए निकलना है और आप जी का यही मिशन है। पुरातन जन्मसाखी कहती है कि यहां आप जी को अकाल पुरख के दर्शन हुए और भाई गुरदास जी भी वार 1, पउड़ी 24 में फरमाते हैं :

बाबा पैधा सचखंडि नउ निधि नामु गरीबी पाई।।

SIKHBOOKCLUB.COM

वापिस प्रक्ट होने पर गुरू साहिब ने फरमाया, ''न को हिन्दू न मुसलमान''। आप जी ने दुनिया को उस परम ज्योति के साथ एक रूप हो कर जीवन जीने की राह दर्शायी और बताया कि वह प्रभु मनुष्य द्वारा डाली गई धार्मिक बांट से ऊपर है।

काज़ी की नमाज़

गुरू नानक साहिब ने कहा, ''सभी जीव बराबर है और कोई भी अपने परिवार, जाति-पाति, रंग या नस्ल के कारण ऊंचा-नीचा नहीं है बल्कि अपने कर्मों के कारण है।''

ऐसे बोल सुन कर काज़ी ने नवाब को शिकायत की, ''नानक लोगों को भ्रम में डाल रहा है कि हम न तो मुस्लमान हैं और न ही हिन्दू। उनके विचार गलत हैं क्योंकि जो नमाज़ पढ़ता है और अल्लाह के ऊपर विश्वास रखता है, वह मुसलमान है।'' नवाब ने अपना एक दूत गुरू साहिब के पास भेजा कि वह शाम की नमाज़ उनके साथ अदा करें। गुरू साहिब ने निमंत्रण स्वीकार किया और वे शाम को मस्जिद में नमाज़ अदा करने के लिए एकत्रित हो गए। वहां पर गुरू साहिब एक ओर खड़े रह कर नवाब व काज़ी को नमाज़ अदा करते देखते रहे। नमाज़ समाप्त होने पर काज़ी ने पूछा-'आपने हमारे साथ नमाज़ अदा क्यों नहीं की?' गुरू

कि वह अपने घर की बनी हुई रोटी ले आए। फिर गुरू साहिब ने भाई लालो के घर से आई रोटी को अपने दायें हाथ में और मलक भागो के रसिक पदार्थ को बायें हाथ में पकड़ा। जैसे ही आप जी ने दोनों को दबाया, भाई लालो की सूखी रोटी में से दूध तथा मलक भागो के पदार्थ में से खून टपकने लगा। वहां उपस्थित सभी लोग यह नज़ारा देख कर हैरान हो गए।

गुरू नानक साहिब मलक भागो से बोले, 'यह सूखी रोटी मेहनत की कमाई का फल है। यद्यपि इसका मालिक ग़रीब है पर फिर भी यह दूध से भरी हुई है जो कि जीवन प्रदान करने वाला है। चाहे तुम्हारे घर के बने पदार्थ स्वादिष्ट है, लेकिन वे ग़रीबों के खून में से आए हैं। तुमने अपनी दौलत क्रूरता व जुल्म से दूसरों का हक मार कर कमाई है, इसीलिए तुम्हारे पदार्थों में से खून निकल रहा है। नेक कमाई वाला जीवन व्यतीत करो। ग़लत ढंग से कमाए पैसे से किया पुण्य किसी काम का नहीं। मुझे नेक व्यक्ति पसंद हैं जो ईमानदारी से कार-व्यवहार करते हैं, चाहे अमीर हो या ग़रीब।''

इसके पश्चात् गुरू साहिब सैदपुर से चले गए और आप ने परमात्मा का संदेश देने के लिए दूर-दराज तक यात्रा की।

हरिद्वार यात्रा

भिन्न-भिन्न स्थानों से होते हुए गुरू नानक साहिब हरिद्वार पहुंचे जहां गंगा नदी में स्नान करने के लिए हज़ारों ही श्रद्धालु एकत्रित थे। नदी के तट पर गुरू साहिब ने देखा कि लोग स्नान कर रहे हैं, और साथ ही पूर्व की ओर उगते सूर्य को जल अर्पण कर रहे हैं।

गुरू साहिब भी पानी में खड़े हो गए और सूर्य की तरफ अपनी पीठ करके आप जी ने पश्चिम दिशा की ओर पानी अर्पण करना आरंभ कर दिया। लोगों के द्वारा नाराज़गी दिखाने पर गुरू साहिब ने उन्हें पूर्व दिशा की ओर जल देने का कारण पूछा। उन्होंने जवाब दिया, 'हम अपने पित्तरों को जल अर्पण कर रहे हैं, जो कि ऊपर सूर्य के देश में विराजमान हैं।'' यह जवाब सुन कर गुरू साहिब ने पश्चिम दिशा की तरफ पानी देना जारी रखा तथा कहा, ''मैं पंजाब में अपने खेतों को पानी दे रहा हूं।'' यह सुन कर लोग हंसने लगे और कहने लगे, ''यह कैसे हो सकता है, जो पानी आप देते हो, वो गंगा में ही गिर जाता है, यह आपके खेतों तक कैसे पहुंचेगा?''

गुरू साहिब ने उन लोगों की ओर मुड़ कर पूछा, ''वह स्थान कितनी दूर है जहां आपके पितृ विराजमान हैं।'' उनमें से एक चतुर व्यक्ति बोला, ''कुछ करोड़ मील''।

गुरू साहिब ने कहा, ''अगर मेरा दिया हुआ पानी मेरे खेतों तक नहीं पहुंच सकता जो कि कुछ सैकड़ों मील की दूरी पर ही हैं तो फिर आपके द्वारा दिया गया पानी आपके पित्तरों तक कैसे पहुंचेगा जो कि करोड़ों मील की दूरी पर हैं।''

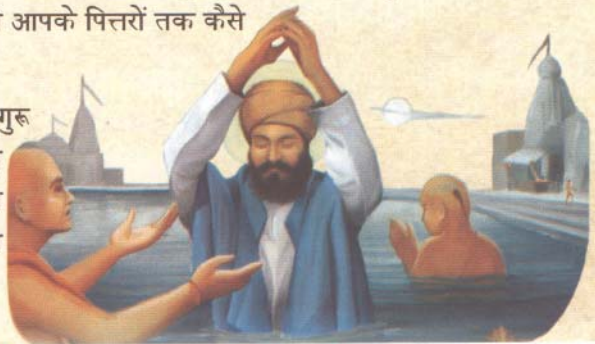

यह सुन कर वहां उपस्थित लोग शांत हो गए। गुरू साहिब ने फिर नदी में से बाहर आकर उन्हें संबोधित किया, ''हे भाई! झूठे विश्वासों की ओर प्रेरित न हुआ करें। आपके द्वारा पित्तरों के लिए दूसरे लोक में प्रयोग

किए जाने वाला पानी, खाना या पैसा किसी भी तरह उन तक नहीं पहुंच सकता। प्रत्येक व्यक्ति को अपने किए कर्मों का फल भोगना ही पड़ता है।''

असल सुच्च (स्वच्छता)

हरिद्वार में ही कुछ साधु अपना भोजन बना रहे थे। गुरू साहिब उनके पास उस स्थान पर पहुंच गए जहां खाना बन रहा था। साधुओं ने वहां एक रेखा खींची हुई थी जिससे कोई उस रेखा को पार करके चौंका झूठा न कर दे।

गुरू साहिब रसोई में वह रेखा देख कर बोले, ''यह चौंका तो पहले ही झूठा है, आपके द्वारा डाली गई यह रेखा किसी काम की नहीं। जब आप ने यहां प्रवेश किया तो वे नीची जाति वाले भी आपके साथ ही थे।'' सभी ने एक दूसरे की ओर देखा लेकिन किसी को समझ नहीं आया कि गुरू साहिब किसके बारे में ऐसा कह रहे हैं? गुरू साहिब ने कहा, ''भंगी, कसाई, जल्लाद व मरासी नीची जाति के लोग हैं जिनके छुए जाने से आप यह समझते हो कि आप अपवित्र हो जाते हो। लेकिन तुम्हारी मैली सोच, मैला जीवन, मैली बातें तथा चतुरता इन कथित नीची जातियों से भी भ्रष्ट हैं और ये तुम्हारे साथी हैं जो कि हमेशा तुम्हारे अंदर ही रहते हैं। जब तक तुम इन गंदे साथियों से छुटकारा नहीं पा लेते और अपना दिल साफ नहीं करते, तब तक यह चौंका अपवित्र रहेगा। रोज़ाना स्नान करने व माथे के ऊपर चंदन लगाने से व्यक्ति पवित्र नहीं हो जाता। वह ही शुद्ध है जो अपना मन निर्मल करता है, नेक विचारों को अपने जीवन में लाता है और हमेशा उस अकाल पुरख को याद रखता है।''

SIKHBOOKCLUB.COM

गुरू नानक साहिब ने अपने निर्मल उपदेशों द्वारा लोगों में पड़े भ्रम का समाधान किया।

अनोखा आशीर्वाद

अपनी उदासियों के दौरान गुरू नानक साहिब व भाई मरदाना एक ऐसे गांव में पहुंचे जहां के लोग केवल खाने-पीने व मौज-मस्ती में ही लगे रहते थे। उन्होंने गुरू साहिब का मज़ाक उड़ाया तथा खाने-पीने व रहने के बारे में भी नहीं पूछा। वे ऐसे लोग थे जो कि कोई नेक सलाह को भी नहीं सुनते थे। उस गांव से बाहर निकलते ही गुरू साहिब ने इन लोगों के लिए कहा, ''बसते रहो।''

कुछ समय पश्चात् गुरू साहिब एक अन्य गांव में पहुंचे जहां के लोग बहुत अच्छे व मेहमान-निवाज़ थे। उन्होंने गुरू साहिब का स्वागत किया तथा प्यार से सेवा की। वे लोग बहुत नेक दिल, परोपकार स्वभाव व मीठे बोल वाले थे। गुरू साहिब ने वहां एक रात के लिए विश्राम किया। वहां से चलते समय गुरू साहिब ने उन्हें यह कह कर आशीष दी, ''उजड़ जाओ।''

यह सुन कर भाई मरदाना जी ने आश्चर्य चकित हो कर गुरू साहिब से पूछा, ''आप जी ने अजीब न्याय किया है। जिन लोगों ने आप के साथ बदसलूक किया, उन्हें आप ने बसते रहने का आर्शीवाद दिया जबकि जिन लोगों ने आपकी इतने प्रेम-सत्कार से सेवा की, उन्हें आप उजड़ जाने का आर्शीवाद दे रहे हैं।''

गुरू साहिब ने कहा, ''पिछले गांव के लोग जहां भी जाएंगे वहां दुराचार व दुष्टता ही फैलाएंगे, इसीलिए अच्छा है कि वे वहीं बसते रहें।

कौडा भील

गुरू नानक साहिब व भाई मरदाना जी अपनी एक यात्रा के दौरान उस स्थान पर पहुंचे जहां भील लोग रहते थे। भील गहरे रंग के थे, उनकी आंखें लाल खून की भांति चमकती थी और वे अपने शरीर पर जानवर की खाल लपेटते थे। वे जंगली जानवरों के शिकार और जंगली फलों पर गुज़ारा करते थे। भाई मरदाना जी अकेले ही जंगल में निकल गए और एक आदमखोर भील कौडा ने उन्हें पकड़ लिया। कौडा इसी प्रकार करता था, वह अकेले यात्री को पकड़ लेता था, उन्हे कुछ दिन बांध कर रखता था और फिर उन्हें अपना आहार बनाने के लिए मार देता था।

जब भाई मरदाना जी बहुत समय तक वापिस नहीं आए तो गुरू साहिब उनको लेने वहां पहुंच गए। गुरू साहिब के दिव्य मुख के दर्शन करते ही कौडा अपराध की भावना से कांप उठा क्योंकि उसने इससे पहले किसी के मुख पर इतनी दिव्य ज्योति व नेक भाव नहीं देखा था। उसका कठोर मन पिघल गया। गुरू साहिब ने कहा, ''भाई! मेरा साथी कहां है? मैं उसे वापिस लेने आया हूं।''

कौडा ने एकदम मरदाना जी को खोल दिया और उन्हें गुरू साहिब के समक्ष ले आया। गुरू साहिब ने कौडा को गलत राह छोड़ने का उपदेश दिया और नेक कमाई करके जीवन व्यतीत करने को कहा। कौडा ने गुरू साहिब को वायदा किया कि वह भविष्य में किसी को नहीं मारेगा तथा गुरू साहिब की शिक्षाओं को अपने जीवन में धारण करेगा।

कई स्थानों से होते हुए गुरू साहिब वापिस तलवंडी पहुंचे जहां वह अपने परिवार के साथ कुछ समय के लिए रहे। तलवंडी में अपने निवास के पश्चात्, गुरू साहिब फिर से अंधकार-ग्रस्त लोगों को सत्य एवम् पवित्रता का संदेश देने के लिए निकल पड़े।

सुमेर पर्वत पर सिद्धों से मुलाकात

कश्मीर से होते हुए, दुर्गम पर्वतों व नदियों को पार करते हुए, गुरू नानक साहिब सुमेर पर्वत पर जा पहुंचे जहां पर कई सिद्धों, साधुओं व योगियो ने अपना टिकाना बनाया हुआ था। वे ऊंचे पर्वत आम व्यक्ति की पहुंच से दूर थे, इसीलिए गुरू साहिब को वहां देख कर योगी हैरान हो कर पूछने लगे, ''इस दुर्गम स्थान पर पहुंचने के लिए किस शक्ति ने आपकी मदद की है।''

गुरू साहिब ने उत्तर दिया, ''मैने केवल एक अकाल पुरख को याद किया है और हमेशा उसकी ही प्यार एवं सत्कार से अराधना की है। उसी की शक्ति मुझे यहां ले कर आई है।'' आप जी ने आगे कहा, ''जब आप जैसे धार्मिक पुरूष संसार का त्याग करके यहां छुप कर बैठ जाएंगे तो कौन जगत को सही राह पर डालेगा और मनुष्यता को बचाएगा।'' गुरू साहिब ने परिवारिक जीवन व्यतीत करने एवं समाजिक वचनबद्धता की दलील दी।

सिद्धों-योगियों ने अपनी जादुई शक्तियों से कई करामातें दिखाई। उन्होंने गुरू साहिब को साथ के तालाब

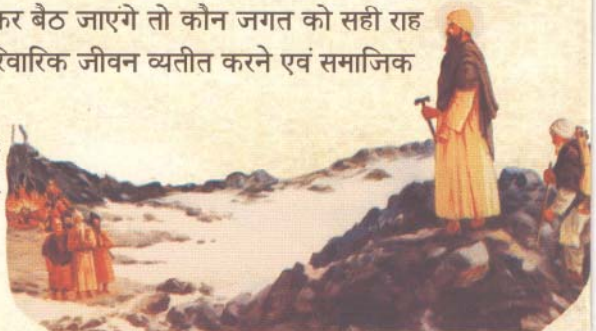

जबकि इस गांव के लोग जहां भी जाएंगे, वहां सूझ-बूझ, दयालुपन व सच्चाई का सबक सिखाएंगे, इसीलिए अच्छा होगा अगर ये गांव छोड़ कर अन्य स्थानों पर जा कर बस जाएं।''

इस प्रकार के बोल सुन कर भाई मरदाना जी हैरान रह गए और कहने लगे, ''सच्चे पातशाह! तेरी महिमा का अंत नहीं पाया जा सकता।''

सच्ची आरती

गुरू नानक साहिब कई स्थानों से होते हुए उड़ीसा के समुद्र तट पर मंदिरों की धरती, जगन्नाथ पुरी पहुंचे। वहां आप ने देखा कि रथ यात्रा निकाली जा रही है जिसमें असंख्य लोग भगवान जगन्नाथ की मूर्ति वाले सोलह पहियों के पत्थर से बने रथ को खींच रहे हैं। संध्या के समय मंदिर में आरती की गई। बेशुमार दीपक जलाए गए। आभूषण, फूलों व सुगंधि से भरे कई सुनहरी थालों को पूजा के लिए सजाया गया। श्रद्धालुओं के द्वारा अपने देवते के ऊपर पंखे झुलाये जा रहे थे, भजन गाए जा रहे थे व टल्लियां बजाई जा रही थी। पंडितों ने गुरू साहिब को भी आरती में सम्मिलत होने का आग्रह किया।

SIKHBOOKCLUB.COM

गुरू साहिब ने कहा, ''मनुष्य के हाथों से बनी हुई मूर्ति को किसी भी तरह जगत का नाथ या जगन्नाथ नहीं कहा जा सकता। वह निरंकार परमात्मा ही असली नाथ व सृजनहार है। कोई भी मानवी हाथ उसकी सृजना नहीं कर सकते और उस अकाल पुरख की आरती तो सदैव हो रही है, वह तो निरंतर जारी है। यह तुम्हारे ऊपर है कि तुम उसे देखना चाहते हो या नहीं।''

पंडितों ने बहुत हैरानी से पूछा, ''बिना किसी के किए, कैसे आरती हो रही है?'' गुरू साहिब ने उसी समय आरती का शब्द उच्चारण किया तथा भाई मरदाना ने रबाब में संगत की :

गगन मै थालु रवि चंदु दीपक बने

तारिका मंडल जनक मोती।।

धूपु मलआनलो पवणु चवरो करे

सगल बनराइि फूलंत जोती।। १।।

कैसी आरती होइि भवखंडना तेरी आरती।।

अनहता सबद वाजंत भेरी।। १।। रहाउ।।

(गु.ग्र.सा. पृ. 663)

वहां मौजूद लोगों ने सच्ची आरती का शब्द श्रवण किया और गुरू साहिब की महिमा का कथन किया।

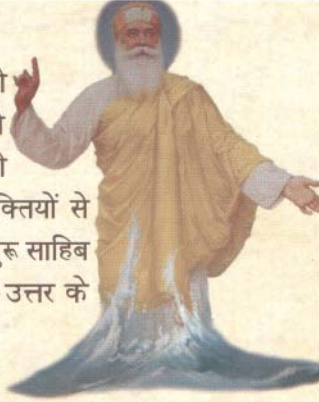

में से पानी भर कर लाने को कहा। लेकिन अपनी शक्तियों से उन्होंने पानी को हीरे-मोतियों में बदल दिया। गुरू साहिब उनकी इस लोभ में उलझाने की तरकीब को समझ गए। आप वहां से बिना पानी लिए ही आ गए और बोले कि तालाब में तो पानी ही नहीं है। जब सिद्धों-योगियों ने देखा कि गुरू साहिब न तो उनकी जादुई शक्तियों से प्रभावित हुए हैं और न ही लोभ-लालच आप जी को लुभा पाया है तो उन सभी ने गुरू साहिब को नमस्कार किया। सिद्धों के साथ गुरू साहिब की लम्बी गोष्ठि हुई जो कि प्रश्न-उत्तर के रूप में 'सिध गोसटि' शीर्षक के नीचे गुरू ग्रंथ साहिब में दर्ज है।

सज्जन ठग

गुरू नानक साहिब व भाई मरदाना जी अपनी यात्राओं के दौरान तुलंडा (अब पश्चिम पाकिस्तान में) नामक शहर में पहुंचे। शहर की ओर जाते मार्ग पर पूजा के स्थान बने हुए थे-हिन्दुओं के लिए मंदिर व मुस्लमानों के लिए मसजिद। इसके इलावा वहां शेख सज्जन ने यात्रियों के लिए रात में विश्राम करने के लिए बढ़िया कमरे बना रखे थे। सज्जन यात्रियों की भली प्रकार सेवा करता और रात को उन्हें मार कर, सामान इत्यादि लूट लेता। फिर उनके मृतक शरीर को वह कमरों के पीछे बने हुए कुएं में दबा देता।

गुरू साहिब व भाई मरदाना जब वहां पहुंचे तो सज्जन दूध जैसे सफेद कपड़े पहन कर, एक शरीफ आदमी की भांति खड़ा हुआ था। गुरू साहिब को देख कर सज्जन ने सोचा कि कोई अमीर व्यक्ति अपने सेवक के साथ आया है तथा इसने चोरों से बचने के लिए साधू की वेशभूषा धारण कर ली है। सज्जन ने गुरू साहिब का स्वागत किया, अदब-सत्कार के साथ उन्हें भीतर ले गया और सेवा में लग गया। रात को विश्राम करने से पूर्व, गुरू साहिब ने एक शब्द का उच्चारण किया तथा भाई मरदाना ने रबाब बजा कर गुरू साहिब का साथ दिया :

SIKHBOOKCLUB.COM

उजलु कैहा चिलकणा घोटिम कालड़ी मसु।। धोतिआ जूठि न उतरै जे सउ धोवा तिसु।।१।।
सजणु सेई नालि मै चलदिआ नालि चलंनि।। जिथै लेखा मंगीऐ तिथै खड़े दिसंनि।।१।।रहाउ।।
कोठे मंडप माड़ीआ पासहु चितवीआहा।। ढठीआ कंमि न आवनी विचहु सखणीआहा।।२।।
बगा बगे कपड़े तीरथ मंझि वसंनि।। घुटि घुटि जीआ खावणे बगे न कहीअनि।।३।।
सिंमल रुखु सरीरु मै मैजन देखि भुलंनि।।
से फल कंमि न आवनी ते गुण मै तनि हंनि।।४।।.....

(गु.ग्र.सा. पृ. 729)

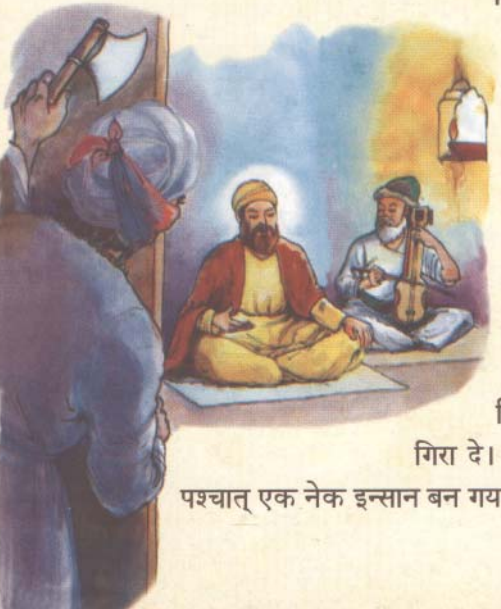

इन पंक्तियों को सुन कर, सज्जन खड़ा हुआ और गुरू साहिब के चरणों पर गिरते हुए सोचने लगा, "ये सभी पंक्तियां मेरे अपने जीवन व कर्मों को दर्शाती हैं। इस महापुरूष को मेरे सभी पिछले कर्मों के बारे में पता है, यह वाकई सच में दूसरों के भीतर देख सकते हैं।" सज्जन ने अपनी सारी पिछली ग़लतियों के लिए गुरू साहिब से माफी मांगी तथा अपने जुर्मों को कबूल किया। गुरू साहिब ने उसे कहा कि वह उन सभी की लूटी संपति वापिस कर दे जिसके बारे में उसे पता है तथा ग़लत कमाई से बने ऊंचे महलों को गिरा दे। सज्जन ने गुरू साहिब की आज्ञा का पालन किया और वह इसके पश्चात् एक नेक इन्सान बन गया जो हमेशा प्रभु की सिफ्त-सलाह में लगा रहता।

मक्का की यात्रा

गुरू साहिब सउदी अरब में मुसलमानों की पवित्र धरती मक्का पहुंचे जहां मुसलमान लोग 'हज' के लिए जाते हैं। कई दिनों के सफर, कुछ पैदल व कुछ ऊंठ द्वारा पूरा करके, गुरू साहिब वहां पहुंचे। रात को गुरू साहिब पवित्र काबे के साथ बने रास्ते पर बैठ गए और वहीं आप काबा की ओर पांव करके विश्राम करने लगे। गुरू साहिब को ऐसा करते देख, एक मुसलमान श्रद्धालु ने क्रोध में आ कर कहा "आप कौन हो और आप अल्लाह के घर की ओर पांव करके क्यों सो रहे हो?" शीघ्र ही वहां और भी लोग एकत्रित हो गए। गुरू साहिब ने नम्रता से उत्तर दिया, "भाई! मुझे बताओ कि कहां अल्लाह नही रहता।" यह वाक्य सुनते ही उस व्यक्ति को एक नए प्रकाश का अनुभव हुआ- प्रभु प्रत्येक स्थान पर निवास करता है, वह किसी विशेष स्थान पर नहीं रहता।

वहां उपस्थित हाजियों ने गुरू साहिब से पूछा कि हिन्दू बड़ा है या मुसलमान, तो गुरू साहिब ने उन्हें उत्तर दिया कि शुभ कर्मों के बिना दोनों को ही रोना पड़ता है तथा केवल हिन्दू या मुसलमान होने से अल्लाह के दरबार में स्थान प्राप्त नहीं होता।

पुछनि फोलि किताब नो हिन्दू वडा कि मुसलमानोई।।
बाबा आखे हाजीआ सुभि अमला बाझहु दोनो रोई।।

(भाई गुरदास जी, वार 1, पउड़ी 33)

SIKHBOOKCLUB.COM

बगदाद के पीर को रौशनी

गुरू नानक साहिब व भाई मरदाना जी मक्के से ईराक देश के बगदाद शहर में पहुंचे। शहर के बाहर की तरफ टिकाना करके, गुरू साहिब ने नमाज़ के समय पारम्पिरिक पवित्र आवाज़ (बांग) दी जिससे वहां के लोग चकित हो गए क्योंकि उन्होंने नमाज़ के लिए इससे पहले कभी इतनी मधुर व भक्ति-भाव वाली आवाज़ नहीं सुनी थी। वहां का पीर भी लोगों के साथ आ पहुंचा और उसने गुरू साहिब से पूछा कि आप किस धार्मिक परंपरा से संबंध रखते हो। पीर ने गुरू साहिब को कई प्रश्न किए, विशेष तौर पर यह कि हिन्दू व मुसलमान में से परमात्मा किसे उत्तम समझता है। गुरू साहिब ने उत्तर दिया, "उत्तमता का संबंध धर्म से नही बल्कि अच्छे कर्मों से है।"

पीर की शंका दूर करने के लिए गुरू साहिब ने और भी कई प्रशनों के उत्तर दिये। फिर भी पीर गुरू साहिब की यह बात मानने को तैयार नही था कि अनगिनत लोक, पाताल व आकाश हैं। गुरू साहिब ने इस संबंध में रौशनी डालने के लिए पीर के पुत्र के मस्तक पर हाथ फेरा और उस ने आंखे बंद करने को कहा। ऐसा करते ही पीर के पुत्र ने अपनी भीतरी आंखों से कई पातालों व आकाशों के दीदार किए। जब उवने आंखे खोलने के पश्चात् बताया कि एक पल में ही उसने अपनी भीतरी नज़रों से क्या कुछ प्रतीत किया है तो वहां उपस्थित सभी लोग गुरू साहिब के चरणों में बैठ गए।

वली कंधारी का अहंकार तोड़ना

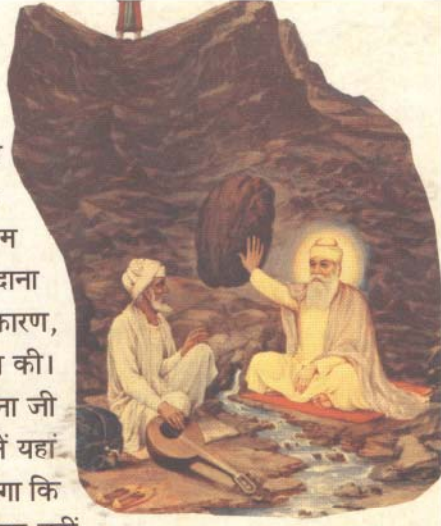

पंजाब की ओर लौटते समय, गुरू साहिब व भाई मरदाना हसन अबदाल नाम के स्थान पर पहुंचे जो कि अब पश्चिम पाकिस्तान में है। आप जी एक पहाड़ी के नीचे रुक गए। उस पहाड़ी के ऊपर एक मुस्लिम फकीर रहता था जिसे वली कंधारी कह कर बुलाया जाता था। भाई मरदाना जी थकान व प्यास महसूस कर रहे थे तथा आस-पास पानी न होने के कारण, मरदाना जी ने पहाड़ी के ऊपर वली के टिकाने पर जा कर पानी की मांग की। यह पूछने पर कि वह कौन है और इस स्थान पर कैसे पहुंचा, भाई मरदाना जी ने उतर दिया कि वह एक रबाबी है और गुरू नानक साहिब की संगत में यहां तक पहुंचा है। वली कंधारी ने पानी देने से इंकार कर दिया और कहने लगा कि अगर उसका गुरू इतना बड़ा महापुरूष है तो उसे अपने मुरीद को प्यासा नहीं रखना चाहिए।

यह सुन कर भाई मरदाना जी वहां से लौट आए और गुरू साहिब को बताया कि वली क्या कह रहा है। गुरू साहिब ने भाई मरदाना जी को एक बार फिर जा कर वली को नम्रता सहित प्रार्थना करने के लिए कहा। मरदाना जी ने गुरू साहिब की आज्ञा का पालन किया पर फिर भी निराश ही लौटे।

इस उपरांत गुरू साहिब ने पहाड़ी को अपने हाथ में पकड़ी छड़ी के सिरे से छूआ। इसी समय वहां से पानी का चश्मा फूट पड़ा और मरदाना जी ने अपनी प्यास बुझाई। लेकिन साथ ही पहाड़ी के ऊपर वली कंधारी के तालाब में से पानी घटना शुरू हो गया और शीघ्र ही सूख गया। क्रोध मे लाल हो कर वली ने ऊपर से ही एक बड़ा पत्थर नीचे की ओर धकेल दिया। गुरू साहिब ने पत्थर को तेज़ी से नीचे की ओर आता देख अपना हाथ ऊपर की ओर उठाया और जैसे ही वह पत्थर गुरू साहिब के हाथ के पंजे के संपर्क में आया, वह वहीं पर ठहर गया। गुरू साहिब के हाथ के पंजे का निशान पत्थर के ऊपर अंकित हो गया और यह अभी भी गुरूद्वारा पंजा साहिब के स्थान पर देखा जा सकता है।

पंजाब पर बाबर की चढ़ाई

गुरू नानक साहिब व भाई मरदाना जी फिर से सैदपुर पहुंचे जहां गुरू साहिब के पुनः दर्शन करके भाई लालो बहुत प्रसन्न हुआ।

काबुल के मुग़ल बादशाह मुहम्मद बाबर ने 1520 ई. में सैदपुर (अब ऐमनाबाद, पाकिस्तान) पर हमला किया। इस हमले के दौरान हुई ख़तरनाक लूट व तबाही को गुरू साहिब ने देखा और आप जी को भी इस हमले के पश्चात् बंदी बना लिया गया। बाबर के हमले के बारे में चर्चा करते हुए गुरू साहिब ने चार शब्द उच्चारण किए जिसे कि सिक्ख साहित्य में 'बाबरवाणी' कहा जाता है। ये हमलावरों द्वारा की गई क्रूरता को ललकार रहे और अमानवीय घटनाओं को महसूस कर रहे हृदय की भावनाएं हैं। गुरू साहिब ने इन शब्दों में प्रभु के न्याय पर विश्वास और आखिर बुराई पर अच्छाई की जीत की बात की है। साथ ही आप जी ने बाबर की फौज को 'पाप की बारात' कह कर संबोधित किया।

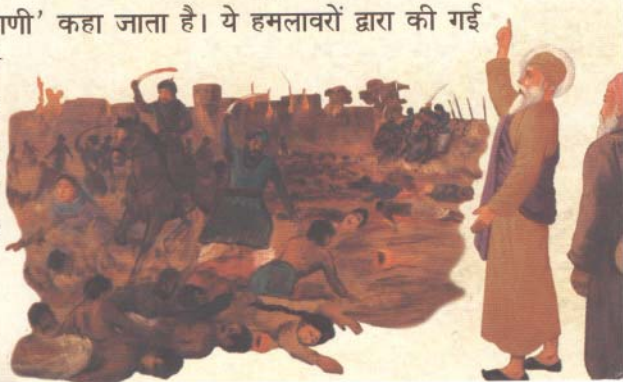

गुरू साहिब व भाई मरदाना को भी औरों के साथ बंदी बना कर काम पर लगा दिया गया। गुरू साहिब को उठाने के लिए भार व भाई मरदाना जी को घोड़ा पकड़ कर चलने के लिए कहा गया। जन्म साखियों में विवरण आता है के गुरू साहिब के बिना किसी सहारे से ही वजन उठ गया और भाई मरदाना जी के पीछे घोड़ा बिना लगाम के चलता गया। बाबर को जब पता लगा तो वह कहने लगा, "मुझे इस शहर पर हमला नहीं करना चाहिए था।" बाबर ने गुरू साहिब के चरणों का स्पर्श करते हुए कहा, "इस फकीर के मुख से अल्लाह के दर्शन होते हैं।" फिर वहां उपस्थित सभी लोग, हिन्दू व मुस्लिम, गुरू साहिब को नमस्कार करने लगे। बाबर ने फिर कहा, "ओ दरवेश! मुझ से कुछ स्वीकार करो।" गुरू साहिब ने उत्तर दिया, "मुझे कुछ नहीं चाहिए लेकिन तुम इन सभी बंदियों को रिहा करो और इनकी संपति लौटा दो।" बाबर ने गुरू साहिब के कथन पर अमल करते हुए सैदपुर के सभी बंदियों को मुक्त कर दिया।

करतारपुर की स्थापना

रावी नदी के तट पर गुरू नानक देव जी ने करतारपुर बसाया जो कि अब पाकिस्तान में सियालकोट ज़िले में है, और अपनी लम्बी यात्राओं के पश्चात् गुरू साहिब ने यहां निवास किया। यहां गुरू साहिब ने अपने दुनियावी जीवन के अंतिम दो दशक अपने महल व दो साहिबज़ादों के साथ खेतीबाड़ी का कार्य करते हुए बिताए।

गुरू साहिब के वचनों को सुनने के लिए लोग यहां आने लगे। गुरू साहिब उन्हें परमात्मा, भक्ति व अच्छे कर्मों के बारे में उपदेश करते। सुबह-सुबह ही बंदगी शुरू हो जाती, उसके पश्चात् कीर्तन होता व फिर सभी इक्टठे बैठ कर लंगर के रूप में भोजन करते। इस प्रकार करतारपुर सिक्ख धर्म का मुख्य केन्द्र बन गया।

बाबा बुढ्ढा जी से मुलाकात

कत्थू नंगल गांव में से निकलते समय एक बूड़ा नाम का बालक दूध का भरा कटोरा लेकर गुरू साहिब से मिलने आया तथा विनति की, "ग़रीब निवाज़! आप जी के दर्शन करके मैं धन्य हुआ हूं। अब आप मुझे इस जन्म-मृत्यु के जाल में से निकाल दो।" गुरू साहिब ने कहा, "तुम्हारी उम्र अभी छोटी है पर तुम बातें बहुत सूझ वाली करते हो।"

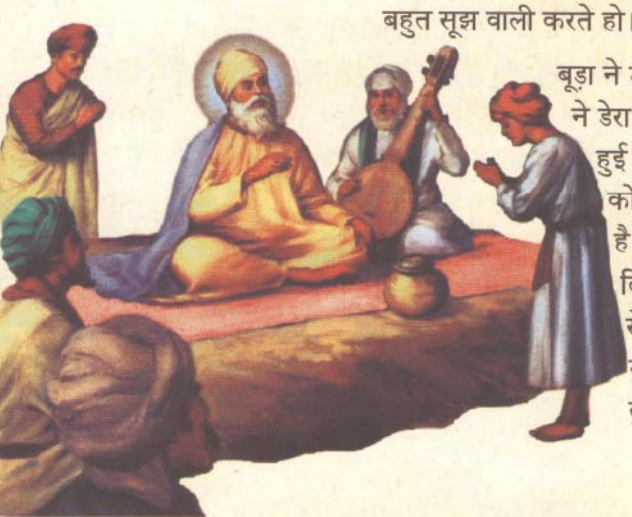

बूड़ा ने उतर दिया, "एक बार हमारे गांव में कुछ सिपाहियों ने डेरा डाला और उन्होंने सारी फसल बर्बाद कर दी-पकी हुई भी व अनपकी भी। तो मुझे लगा कि इन सिपाहियों को कोई नही बता सका कि कौन सी फसल पकी हुई है और कौन सी कच्ची है, इन्होंने सभी का नाश कर दिया। फिर मौत को हमारे ऊपर हाथ डालने से कौन रोकेगा, चाहे हम छोटे हो या बूढ़े।" यह सुन कर गुरू साहिब बोले, "तुम बालक नहीं हो बल्कि तुम्हारे पास बूढ़े लोगों वाली सूझ है। उस दिन से

बूड़ा को सभी भाई बूढ़ा कहने लग पड़े और बाद में वह बाबा बुद्ढा जी के नाम से सिक्ख जगत में जाने गए। उन्होंने अपना ज्यादा समय अपने गांव की बजाए करतारपुर में ही बिताया जहां गुरू साहिब ने टिकाना किया हुआ था।

अचल बटाले में योगियों से संवाद

देश भर के सिद्ध, साधू व योगी तीर्थ यात्रा करते हुए बटाले के अचल मंदिर में आते हैं, विशेष तौर पर हर वर्ष लगने वाले शिवरात्रि के मेले पर। गुरू साहिब भी एक बार इस मेले में करतारपुर से पहुंचे।

गुरू साहिब के बटाला पहुंचने पर ही यह खबर फैल गई कि एक माने हुए महापुरूष 'गुरू नानक' आए हैं और आप जी के दर्शन करने के लिए लोग एकत्रित हो गए। यहां गुरू साहिब ने नाथ-योगियों से लम्बा संवाद किया। इनके मुखिया योगी भंगरनाथ ने गुरू साहिब को प्रश्न किया, "आपने दूध में कांजी क्यों डाल दी है, फटे हुए दूध में से मक्खन नहीं निकलता, आप ने क्यों उदासियों का भेष उतार कर, पुनः गृहस्थी का जीवन धारण कर लिया है।"

गुरू साहिब ने उत्तर दिया, "तुम्हें दूसरे ढंग से दीक्षा मिली है। तुम ने अपना बर्तन ठीक से साफ नहीं किया, इसीलिए मक्खन कड़वा हो गया है। तुम गृहस्थी का त्याग करके योगी बने हो लेकिन फिर भी मांगने के लिए तुम गृहस्थियों के घरों पर ही जाते हो। तुम रह नहीं सकते अगर वे तुम्हें कुछ न दें।"

SIKHBOOKCLUB.COM

योगियों ने फिर गुरू साहिब को अपनी जादुई शक्तियों से प्रभावित करना चाहा और उन्होंने गुरू साहिब को भी करामात दिखाने के लिए ललकारा। गुरू साहिब ने उनके जंत्र-तंत्र की निषेधी करते हुए कहा, "सिद्धियों द्वारा प्राप्त किया गया जादू निर्रथक व अनावश्यक है। मैं 'शब्द' के बिना, किसी के ऊपर निर्भर नहीं करता। परमात्मा के सच्चे नाम के बिना मेरे पास अन्य कोई करामात नहीं है। हमें करामातें दिखा कर दैवी विधान में दखल नहीं देना चाहिए।" गुरू साहिब के कथन सुन कर योगियों ने सहमति प्रक्ट की।

मुलतान के पीरों से मुलाकात

बटाले से चल कर, गुरू साहिब मुलतान पहुंचे जो कि मुसलमान पीर-फकीरों का प्रमुख केन्द्र रहा है। जैसे ही गुरू साहिब मुलतान पहुंचे, वहां कें पीर गुरू साहिब के पास दूध का ऊपर तक भरा एक कटोरा लेकर पहुंच गए। इस प्रकार वे कहना चाहते थे कि यह स्थान पहले ही धार्मिक मुखियों से भरा हुआ है।

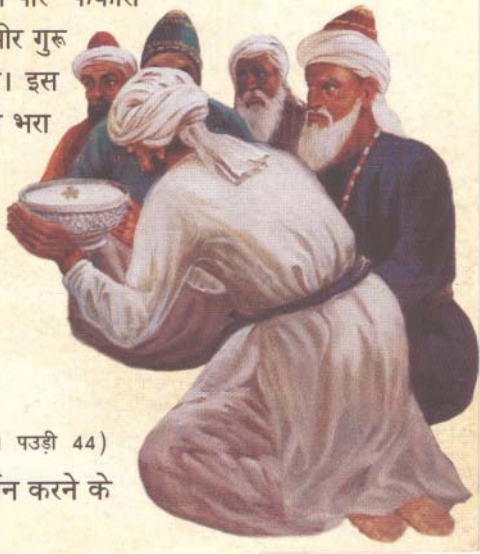

गुरू साहिब ने कटोरे में दूध के ऊपर एक चमेली का फूल रख दिया जो यह दर्शाता था कि यहां बिना किसी को हटाए मैं अपना स्थान बना लूंगा।

बाबे कढि करि बगल ते चंबेली दुध विच मिलाई।।
जिउ सागर विचि गंग समाई।।

(भाई गुरदास, वार 1 पउड़ी 44)

मुलतान में कई लोग गुरू साहिब के उपदेशों को श्रवण करने तथा दर्शन करने के

लिए आए, जिसमें मुसलमान फकीरों के मुरीद भी शामिल थे।

मुलतान से गुरू साहिब सतलुज नदी के तट पर मुसलमान पीरों के केन्द्र पाकपटन पहुंचे। इस स्थान पर गुरू साहिब ने प्रसिद्ध सूफी फकीर शेख फरीद जी की गद्दी पर बैठे शेख ब्रहम से फरीद जी की बाणी प्राप्त की जो कि बाद में (गुरू) ग्रंथ साहिब में भी दर्ज की गई। इस पवित्र ग्रंथ में बाणी दर्ज करने के लिए कसौटी केवल गुरू नानक साहिब के सिद्धांत थे, न कि जाति या श्रेणी की उत्तमता। गुरू साहिबान की बाणी के इलावा इसमें हिन्दू भगतों व मुसलमान पीर-फकीरों की बाणी को भी शामिल करके योग्य सम्मान दिया गया है।

गुरू अंगद देव जी को गुरगद्दी

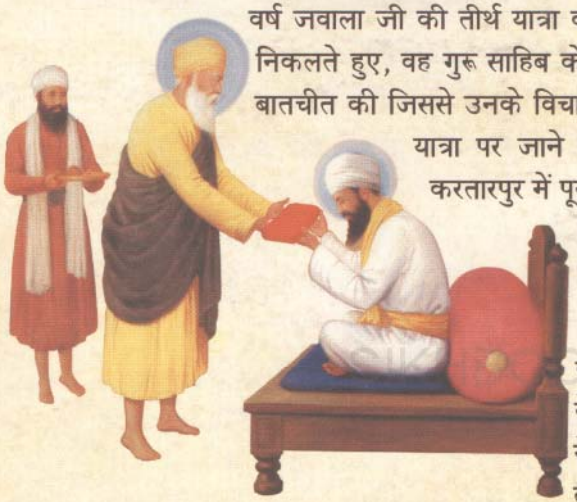

खडूर से एक नेक व धर्मी नौजवान, भाई लहणा जी, गुरू नानक साहिब के दर्शन करने आए। वह हर वर्ष जवाला जी की तीर्थ यात्रा करते थे और एक बार यात्रा के बीच में ही, करतारपुर से निकलते हुए, वह गुरू साहिब के दर्शनों के लिए ठहर गए। गुरू साहिब ने भाई लहणा से बातचीत की जिससे उनके विचारों में भारी परिवर्तन आ गया। उन्होंने यह कह कर आगे यात्रा पर जाने से साथियों को इन्कार कर दिया कि यात्रा का मंत्वय करतारपुर में पूरा हो गया है। गुरू नानक साहिब के शेष जीवन तक, भाई लहणा कभी करतारपुर व कभी खडूर साहिब में रहने लग पड़े।

गुरू नानक साहिब ने भाई लहणा को 'अंगद' नाम दिया कि यह उनका 'अंग' ही बन गए हैं। अंगद जी ने अपने आप को पूरी तरह गुरू के शब्द व सेवा के कार्यों में समर्पित कर दिया। एक बार अंगद जी करतारपुर पहुंचे तो गुरू नानक साहिब खेतों में काम कर रहे थे। गुरू साहिब ने उन्हें भीगी हुई घास का बंडल उठा कर घर तक ले जाने को कहा। यह न देखते हुए कि उन्होंने उस समय नये कपड़े पहने हुए हैं, उन्होंने उस भीगे बंडल को उठाया और अपने सिर पर रख लिया। घर पहुंचने तक, घास में से निकलते कीचड़ के कारण उनके सारे कपड़े खराब हो गए। जब गुरू नानक साहिब के महल माता सुलखणी जी ने इस पर नाराज़गी प्रक्ट की तो गुरू नानक साहिब ने कहा-''यह कीचड़ के नहीं बल्कि केसर के छींटे हैं।'' यह संकेत अंगद जी की निष्काम सेवा व हुक्म मानने की ओर था जिस कारण गुरू नानक साहिब ने उन्हें गुरगद्दी के लिए योग्य जाना। गुरू नानक देव जी ने अंगद जी की कई परीक्षाएं भी लीं। अंगद जी के नेक व सेवा-भाव वाले स्वभाव को दर्शाने वाली कई घटनाएं मौजूद हैं।

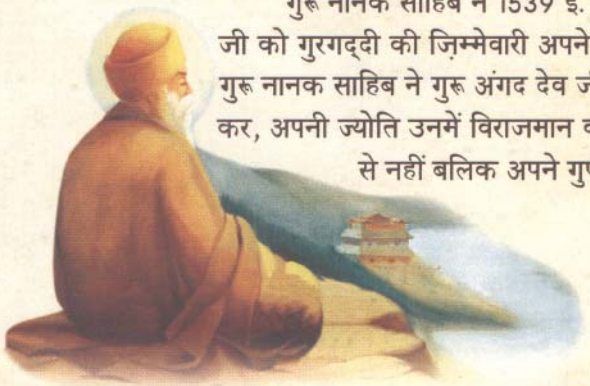

गुरू नानक साहिब ने 1539 ई. में अपने दोनों साहिबज़ादों को प्रमुखता न देते हुए अंगद जी को गुरगद्दी की ज़िम्मेवारी अपने ज्योति-जोति समा जाने के कुछ दिन पूर्व ही सौंप दी। गुरू नानक साहिब ने गुरू अंगद देव जी को दूसरा नानक नियुक्त करके, अपने बराबर स्थान दे कर, अपनी ज्योति उनमें विराजमान करके यह दर्शा दिया कि गुरगद्दी का उतराधिकारी जन्म से नहीं बलिक अपने गुणों के कारण होता है।